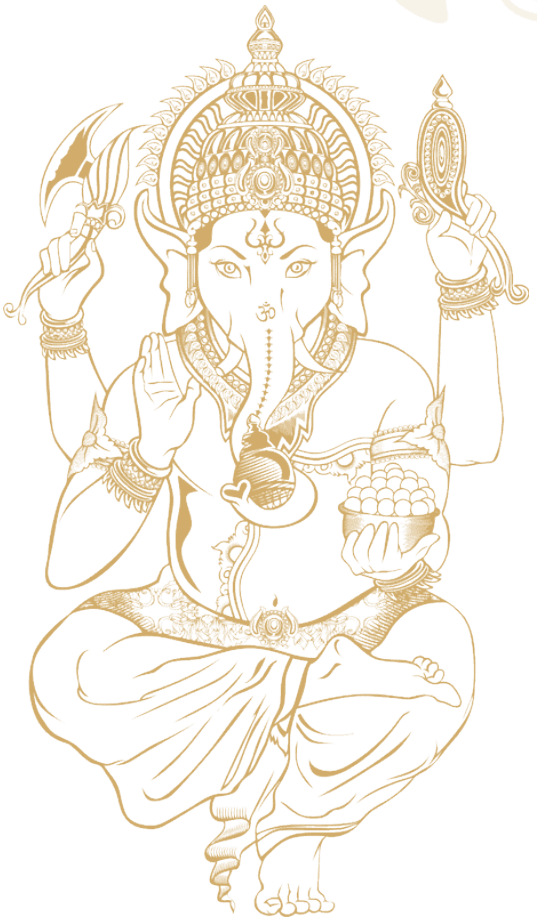

diya

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121189301

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121189301 Date: 06/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/05/1996	जन्म तिथि	11/10/2002
शुक्रवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 08:02:00	जन्म समय	19:10:00 घंटे
घटी 06:18:27	जन्म समय(घटी)	31:58:00 घटी
India	देश	India
Bilaspur	स्थान	Bilaspur
31:18:00 उत्तर	अक्षांश	31:18:00 उत्तर
76:48:00 पूर्व	रेखांश	76:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:48	स्थानिक संस्कार	-00:22:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:30:37	सूर्योदय	06:22:47
19:08:14	सूर्यास्त	17:56:04
23:48:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:28

मिथुन	लग्न	मेष
बुध	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
मकर	राशि	धनु
शनि	राशि-स्वामी	गुरु
धनिष्ठा	नक्षत्र	मूल
मंगल	नक्षत्र स्वामी	केतु
1	चरण	2
ब्रह्म	योग	शोभन
बालव	करण	तैतिल
गा-गगन	जन्म नामाक्षर	यो-योगिता
वृष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
वैश्य	वर्ण	क्षत्रिय
जलचर	वश्य	मानव
सिंह	योनि	श्वान
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	आद्य
मार्जार	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 6वर्ष 4मा 14दि		04:35:18	मिथु	लग्न	मेष	20:29:02	केतु 5वर्ष 0मा 1दि	
गुरु		25:54:44	मेष	सूर्य	कन्या	24:10:39	शुक्र	
23/09/2020		24:31:38	मक	चंद्र	धनु	03:48:11	13/10/2007	
23/09/2036		11:41:41	मेष	मंगल	कन्या	03:27:12	13/10/2027	
गुरु	11/11/2022	03:21:03	वृष व	बुध	कन्या	06:21:06	शुक्र	11/02/2011
शनि	25/05/2025	23:48:05	धनु व	गुरु	कर्क	19:53:42	सूर्य	12/02/2012
बुध	31/08/2027	02:36:44	मिथु	शुक्र व	तुला	21:42:22	चन्द्र	12/10/2013
केतु	05/08/2028	09:49:37	मीन	शनि व	मिथु	05:11:39	मंगल	12/12/2014
शुक्र	06/04/2031	22:53:49	कन्या व	राहु	वृष	16:08:16	राहु	12/12/2017
सूर्य	24/01/2032	22:53:49	मीन व	केतु	वृश्चि	16:08:16	गुरु	12/08/2020
चन्द्र	25/05/2033	10:46:34	मक व	हर्ष व	कुंभ	01:14:51	शनि	13/10/2023
मंगल	01/05/2034	03:54:56	मक व	नेप व	मक	14:19:34	बुध	13/08/2026
राहु	23/09/2036	08:16:28	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	21:34:49	केतु	13/10/2027

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:26 चित्रपक्षीय अयनांश **23:53:28**

लग्न-चलित

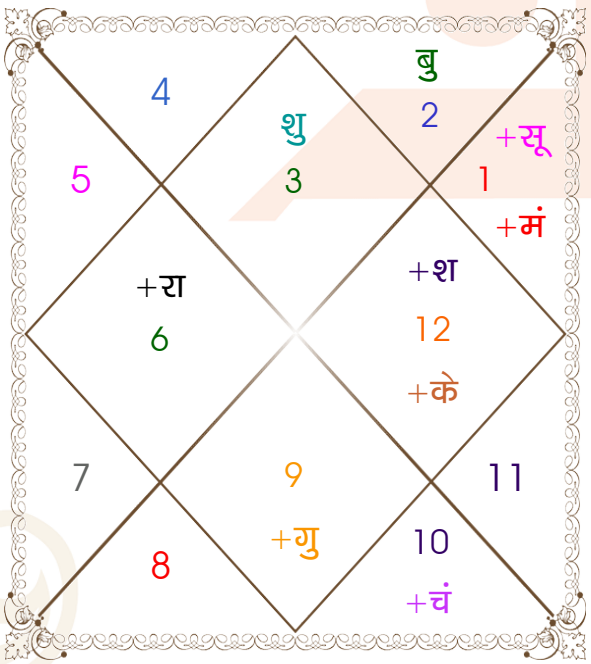

लग्न-चलित

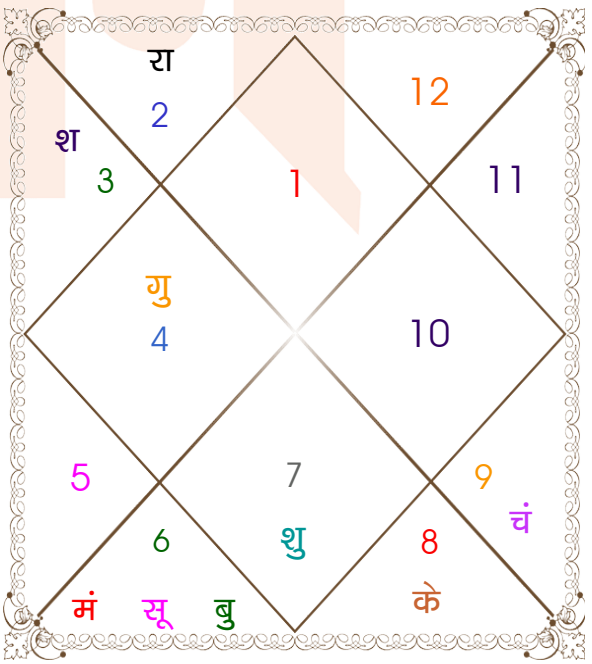

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	श्वान	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	गुरु	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	धनु	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.50		

कुल : **20.5 / 36**

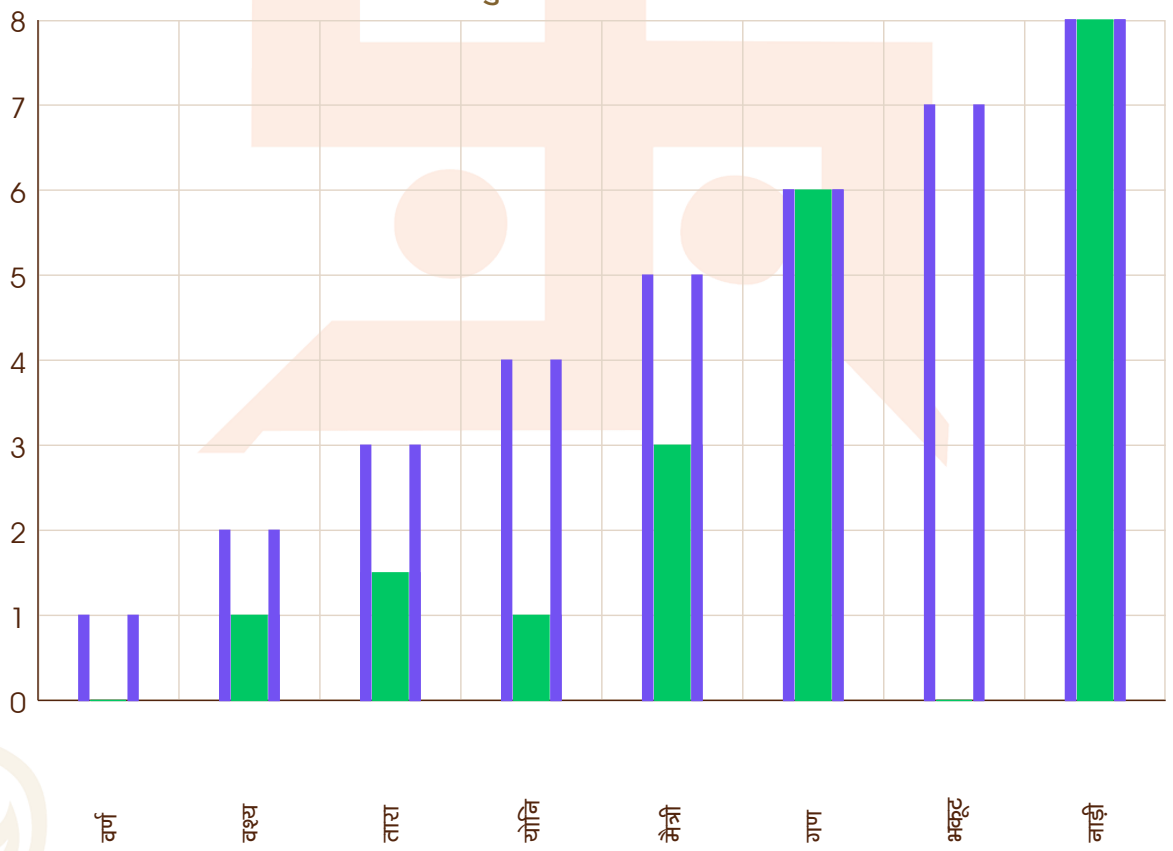

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

। का वर्ग मार्जार है तथा diya का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर ।म है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार। और diya का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

। मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

diya मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

। तथा diya में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

। का वर्ण वैश्य है तथा diya का वर्ण क्षत्रिय हैं। क्योंकि diya का वर्ण । के वर्ण। ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। इसके फलस्वरूप diya अति वर्चस्वशाली, आक्रामक, झगड़ालू प्रवृत्ति की होगी एवं देखभाल नहीं करने वाली होगी। diya को हमेशा यह घमंड एवं अहंकार होता रहेगा कि वह अपने पति। श्रेष्ठ है तथा हमेशा अपने पति एवं पति के परिवार के ।दस्यों को नीची निगाह। देखने वाली होगी।

वश्य

। का वश्य जलचर है एवं diya का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर ।कता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे ।माप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह ।म्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इ। स्थिति में diya अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम ।मझती रहेगी तथा चाहेगी कि । उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं ।मृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

तारा

। की तारा प्रत्यरि तथा diya की तारा ।धक है।। की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत । कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो ।कता है। उसके अवैध ।बंध भी हो ।कते हैं। परिणामस्वरूप diya को काफी कष्टों का ।मना करना पड़ ।कता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो ।कता है।

योनि

। की योनि सिंह है तथा diya की योनि श्वान है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच ।मान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो ।कते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले ।कता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर ।कते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर ।मझदारी की कमी ही हो ।कती है। यदि ।मझदारी और ।मझबूझ। काम न लिया गया तो कुछ ।मय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच ।कती है। इ। प्रकार परस्पर प्रेम एवं ौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। ।थ ही दोनों के बीच अविश्वा। की भावना भी रह ।कती है। कभी-कभी धनहानि

होने की भी ंभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर ंमझदारी एवं बुद्धि ो काम लें तो स्थिति को ुधारा भी जा ंकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में ुख ंमृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इ ंप्रकार वैवाहिक जीवन ंघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की ंभावना है अतः ंतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । एवं diya दोनों के राशि स्वामी परस्पर ंम हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार ो औसत मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि ो यह मिलान औसत माना जायेगा। इसके कारण जीवन एवं करियर में हमेशा उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों के बीच प्रेम एवं ंहयोग का माहौल रहेगा किंतु यदा-कदा आप ंमें ये लड़ाई-झगड़ा भी कर ंकते हैं। हालांकि ये जल्दी ही अपने झगड़े को भुलाकर ंमझौता भी कर लेंगे तथा जीवन पथ पर आगे बढते रहेंगे। ंफलता पाने के लिए इनको अथक परिश्रम एवं उद्यम करना पड़ ंकता है।

गण

। का गण राक्ष ंस है तथा diya का गण भी राक्ष ंस है। अर्थात diya का गण । के गण के ंमान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण । एवं diya दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श ंबित होंगे।

भकूट

। से diya की राशि द्वादश भाव में स्थित है diya से । की राशि द्वितीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके फलस्वरूप दोनों के बीच कलह, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं परिवार में कुछ अनहोनी घटनाएं आदि हो ंकती हैं। इ ंमिलान में । परिश्रमी, परिवार ो प्रेम करने वाला, अच्छा कमाने वाला तथा बचत करने वाला होगा किंतु diya का स्वभाव इसके ठीक विपरीत होगा। diya की शारीरिक स्थिति कमजोर तथा स्वास्थ्य अक्सर खराब रह ंकता है। ंथ ही diya तुरंत क्रोधित होने वाली तथा अपव्ययी होंगी। वह अपने पति द्वारा कमाए गए पैसों को अपने फालतू शौकों एवं दिखावे में व्यय करने वाली होंगी। परिणामतः दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे।

नाड़ी

। की नाड़ी मध्य है तथा diya की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी ंमान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि ो दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का ंमन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को ंतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का ंतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी ंतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान

संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

। की राशि पृथ्वीतत्व युक्त मकर तथा diya की राशि अग्नितत्व युक्त धनुराशि है। पृथ्वी एवं अग्नि में नैसिर्गक विषमता होने के कारण दोनों के मध्य स्वभावगत असमानता रहेगी फलतः परस्पर ।बंधों में तनाव रहेगा जिससे वैवाहिक जीवन परेशानी ो युक्त रहेगा। अतः यह मिलान अनुकूल नहीं रहेगा।

। की राशि का स्वामी शनि तथा diya की राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर ।म राशियों में स्थित है। अतः । और diya दोनों के वैवाहिक ।बंधों में मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम ।हयोग तथा ।हानुभूति का भाव विद्यमान रहेगा ।।थ ही ुख दुख में एक दूसरे को ।हयोग प्रदान करने को तत्पर रहेंगे। ये दोनों परस्पर गुणों की मुक्त भाव ो प्रशंसा करेंगे तथा ।तमित्रों की तरह कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः वैवाहिक जीवन में ुखद क्षणों की प्राप्ति होगी।

। और diya की राशियां परस्पर द्वितीय तथा द्वादश भाव में स्थित हैं शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। अतः इसके प्रभाव ो उपरोक्त शुभफलों में न्यूनता आएगी तथा आप। में प्रेम ।हयोग के स्थान पर विरोध एवं वैमनस्य का भाव उत्पन होगा जिससे ।बंधों में तनाव तथा कटुता का भाव रहेगा। ।।थ ही एक दूसरे के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी रहेगा फलतः वैवाहिक जीवन में भी न्यूनता रहेगी तथा ुखद क्षणों का अभाव रहेगा। यदि । और diya बुद्धिमता एवं ।मंजस्य ो काम ले तो इनमें किंचित शुभता आ ।कती है।

। का वश्य जलचर तथा diya का वश्य मानव है। जलचर तथा मानव में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अन्तर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर भी असमानता होगी। अतः कामसंबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा ।तुष्ट रखने में असमर्थ रहेंगे। जिससे दाम्पत्य ।बंधों में कटुता रहेगी।

। का वर्ण वैश्य तथा diya का वर्ण क्षत्रिय है। अतः । की प्रवृति धनार्जन में होगी तथा धन को विशेष महत्व देंगे परन्तु diya प्रायः परिश्रमी कार्यो को ।पन्न करेगी फलतः कार्यक्षेत्र में असमानता के कारण यदा कदा ।मस्याएँ उत्पन्न हो ।कती हैं।

धन

। और diya दोनों की तारा परस्पर ।म है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा ।मान्य रूप ो धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों ।मर्थ होंगे।। और diya दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है। अतः यह भकूट दोष माना जाएगा जिससे धनार्जन में परिश्रम की बहुलता रहेगी लेकिन मंगल के शुभ प्रभाव ो उचित धन प्राप्त करके आर्थिक स्थिति में ुदृढ़ता बनी रहेगी।

भकूट दोष के प्रभाव े। की प्रवृति व्ययशील होगी। वह जुआ ।ट्टा लाटरी आदि पर भी वे अधिक व्यय करेंगे जिससे यदा कदा अर्थिक विषमता की अनुभूति हो ।कती है लेकिन इसका प्रभाव अधिक ।मय तक नहीं रहेगा। ।मान्यतया स्थिति अनुकूल ही रहेगी तथापि । को ऐसी प्रवृतियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

। की नाड़ी मध्य तथा diya की नाड़ी आद्य है। अतः दोनों का जन्म अलग अलग नाड़ियों में होने के कारण यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके शुभ प्रभाव े अपने ।ंसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा ।मय ।म्पन्न करने में वे ।मर्थ होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशहाली तथा ।न्तुष्टि बनी रहेगी तथा ।मय भी ुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। ।थ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः दोनों स्वस्थ तथा प्रसन्नचित रहकर अपना जीवन व्यतीत करने में ।फल होंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि े। और diya का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव े उन्हें उचित ।मय पर ंतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। ।थ ही बच्चों के जन्म में भी ।मान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग े करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त । और diya के पुत्र एवं कन्या ंतति की ंख्या ।मान होगी।

प्रसव के विषय में diya के मन में पहले े ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन diya को इ। विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा ।मान्य रूप े गर्भावस्था का ।मय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में diya को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा ुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में ।फल होंगी। ।थ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष े । और diya सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता े उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। ।थ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य ।म्पन्न नहीं करेंगे। इ। प्रकार । और diya का पारिवारिक जीवन ुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

diya के ।। से प्रायः अच्छे ंबध रहेंगे। यद्यपि उनकी ।। अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत diya के लिए अनुकरणीय हो ।कते है। ।थ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष ।मस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

diya अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं ेवा भाव े ।सुर को प्रसन्न एवं ।न्तुष्ट करने में ।फलता प्राप्त करेंगी। ।थ ही ननद एवं देवरों के ।थ भी उनके ंबध मित्रता

पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण lहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में lफल रहेंगी।

इl प्रकार diya के प्रति उनके lll ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीताे पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण ुख ुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

l तथा lll के ंबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि l तथा इनकी lll आपसी llमंजस्य तथा बुद्धिमताे व्यवहार करें तो ंबधों की मधुरता में वृद्धि हो lकती है।

लेकिन lसुर के llथ में l के ंबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान lम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। llथ ही उनसे पिता के lमान ही व्यवहार करेंगे। llथ ही वे भी l को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। l समय lमय पर अपने lसुरे आवश्यक तथा बहुमूल्य lलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु llले तथा llलियों के llथ में ंबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपl में स्नेह lहयोग तथा lहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इl प्रकार llमान्य रूपे lसुरालवालों का दृष्टिकोण l के प्रति अनुकूल ही रहेगा।